

रेजांग ला के महानायक

नायब सूबे. रामचंद्र यादव (वीर चक्र 1962 भारत-चीन युद्ध)



कार्डिनं.:- JC-17131

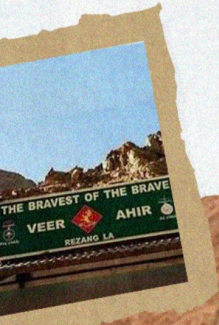
जिम्मेवारी:- कमांडर पलटन 9, चालीं कंपनी

पिता का नाम:- श्री तिरखा राम

जन्म दिनांक:- 11 फरवरी 1929

नामांकन की तिथि:- 11 फरवरी 1948

पता:- गांव मंडोला जिला रेवाड़ी (अहीरवाल)



Swipe
Left



पलटन 9 के नायब सूबेदार रामचंद्र यादव का जन्म अहीरवाल के जिला रेवाड़ी के गांव मंडोला में हुआ था। अगर आप इस युद्ध की सच्ची और पूरी कहानी जानते हैं तो आप जरूर इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि रामचंद्र यादव साहब इस युद्ध के सबसे बड़े महानायकों में से एक थे। पलटन 9 के पास एक 2 इंच मोर्टार, 2 LMG, हर सैनिक के लिए .303 रायफल थी और हथगोले थे।

बेहद मजबूत इच्छाशक्ति और सख्त स्वभाव के हरीराम यादव की अगुवाई में पलटन 9 को चीनी हमला तो रोकना था ही, साथ में उनके पास पलटन 8 को कवर फायर, कंपनी हेडक्वार्टर और 3 इंच मोर्टार सेकशन की रक्षा करने की जिम्मेदारी भी थी। पलटन 9 की पोजीशन, नायब सूबेदार हरीराम यादव की पलटन 8 से 1 किलोमीटर पीछे पश्चिम दिशा में थी, कंपनी हेडक्वार्टर जहां मेजर शैतान सिंह थे उससे 300 मीटर और 3 इंच मोर्टार से सेकशन से 450 मीटर आगे पूर्व की दिशा में थी। चीन के शुरूआती 6 हमलों में पलटन 9, पलटन 8 को LMG से कवर फायर दे रही थी। जब पलटन 7 और 8 को चीनियों ने पूरा खत्म कर दिया। तब उन्होंने लगभग सुबह 8:30 बजे रामचंद्र यादव की पलटन 9 पर फोकस किया और पूर्व, दक्षिण और पश्चिम दिशा से घेरकर उनपर हमला शुरू किया। बदलते हालात में मेजर शैतान सिंह के आदेश पर उन्हें अपने सेकशन 1 और सेकशन 2 के सभी फौजी मेजर साहब के पास भेजने पड़े साथ ही एक LMG भी कंपनी हेडक्वार्टर भेजनी पड़ी। उनके पास चीनियों से मुकाबले के लिए सिर्फ सेकशन 3 एक LMG के साथ और 2 इंच मोर्टार सेकशन के कुछ सैनिक ही रह गए।

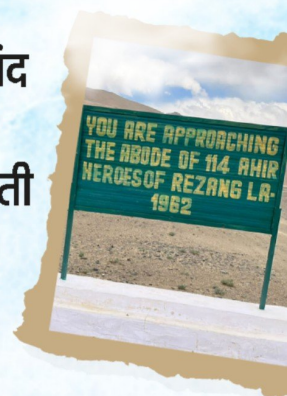


जंगल
खुद

Swipe
Left



सीमित हथियार और सैनिकों के बावजूद उन्होंने जबरदस्त तरीके से चीनियों को आधे घंटे तक रोक के रखा। पीछे कंपनी हेडक्वार्टर से 2 LMG और 3 इंच मोर्टार सेकुरान भी चीनियों को पलटन 9 तक पहुंचने में रोक रहे थे। ..लेकिन लड़ते लड़ते पलटन 9 के पास गोलियां खत्म हो गईं, साथ ही पीछे से LMG और मोर्टार सेकुरान का फायर भी बंद हो गया क्योंकि वहां या तो सब मारे गए या बुरी तरह घायल हो गए। चीनियों के बड़े हथियारों जैसे MMG, RCL, रॉकेट लॉन्चर की मार और आगे बढ़ती हुई कभी ना खत्म होने वाली सैनिकों की लहर के बीच वो और उनके साथी दादा कृष्ण की जय बोल कूद पड़े और हाथों से, बैनेट से लड़ाई लड़ने लगे। थोड़ी ही देर में चीनियों ने सभी की छाती को गोलियों से भर दिया। इस बीच रामचंद्र यादव को भी एक गोली लगी, उन्होंने अपने पास पड़े चीनी सैनिकों की लाश के बीच में खुद को छुपाकर पास पड़ी रायफल से फिर चीनियों पर फायर कर दिया, कुछ चीनी तुरंत मारे गए। पोजीशन जाहिर होते ही वो फिर चीनियों पे खुद पड़े लेकिन गोलियों और बैनेट के वार से घायल हो गिर पड़े। उनके साथ के सभी सैनिक मारे गए। वो फिर उठे और खून से लथपथ शरीर के बावजूद भी वो चीनियों से गुत्थमगुत्था की लड़ाई लड़ते रहे लेकिन अंत में बेहोश हो कर गिर पड़े। तब लगभग सुबह 9 बजे चीनियों ने उन्हें बेहोशी की हालत में ही गिरफ्तार कर लिया, अगले 6 महीने चीन की कैद में रहने के बाद वो वापस भारत लौटे।



Swipe
Left



बेहद मजबूत कदकाठी के नायब सूबेदार रामचंद्र यादव साहब ने होश गंवाने तक एक भी चीनी सैनिक को पलटन 9 से आगे नहीं जाने दिया। मेजर शैतान सिंह, जो पलटन 9 के सेकशन 1 और 2 के सैनिकों के साथ पलटन 7 की पोजीशन पर दुबारा कब्जा करने के लिए जा रहे थे उन तक चीनी ना पहुंचे इसलिए वो दीवार बनकर खड़े रहे। अगर बार है वीरता की करे तो नायब सूबेदार रामचंद्र यादव साहब परमवीर चक्र के हकदार थे। लेकिन फौज ने उन्हें सिर्फ वीर चक्र से ही सम्मानित किया। हम भारत सरकार से निवेदन करते है कि रेजांग का युद्ध पर दुबारा रिव्यू कमेटी गठित कर रामचंद्र यादव को परमवीर चक्र से सम्मानित किया जाए।

रामचंद्र यादव अमर रहे।
रेजांग ला के वीर अहीर अमर रहे।

दादा कृष्ण की जय

